– डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी

एक गैस काण्ड यह भी

तीस वर्षों से ज्यादा समय तक डॉक्टरी की तपस्या के पश्चात मुझे यह ज्ञान मिला है कि इस नश्वर जीवन की अमर समस्या 'गैस समस्या' है।

हँसिये मत! सच कह रहा हूँ! और हमें भोपाल का जानकर यह भी न मान लिया जाये इन भोपालियों को गैस–कांड के बाद हर बात में गैस का रोना रोने की आदत पड़ गई है। मित्र, हम उस गैस की बात नहीं कर रहे। भोपाली आदमी भी देश के साथ जुड़ा है और देश की अन्य समस्याएँ उसे भी परेशान करती हैं। और आप जानते हैं कि राष्ट्र की अनेक समस्याओं में गैस की समस्या प्रमुख है।

इसे वायु भी कहते हैं। इसकी विशेषता यह है कि यह या तो बहुत बनती है, या कि लोग यह शिकायत करते आते हैं डॉक्टर साब, गैस बिल्कुल नहीं बन रही। या यह, कि गैस बन तो रही है, पर निकल नहीं रही। उत्पादन जारी है, और ग्राहकी है ही नहीं–माल उठाया नहीं जा रहा और आवक ज़ोरों पर है–ऐसा मामला। फैक्ट्री होती तो कभी की बंद हो गई होती। कुछ बताते हैं कि एक गोला सा उठता है, जो पेट में नीचे से उठता है और ऊपर सिर पर जाकर लगता या ठनकता है। या वहीं गोल घूमता है, या ऊपर जाकर अटकता है। गैस का व्यवहार छापामारों जैसा, पता नहीं चलता है कि कब, कहाँ, क्या कर बैठेगी? सो समस्या तो है। गैस हल्की है, पर समस्या भारी।

इस समस्या के आगे अन्य समस्याएँ मायने ही नहीं रखतीं। जैसे कि हमने एक सज्जन को उनकी दिल की बीमारी के प्रति आगाह करते हुये चेताया कि इस समस्या से आपकी जान तक को खतरा हो सकता है, तो वे बोले की डॉक्टर साब, यह सब तो ख़ैर ठीक है, पर आप तो यह बतायें कि बेसन के पकोड़े खाने के बाद हमें जो जानलेवा गैस बनती है, उसकी कोई शर्तिया गोली है कि नहीं, कि जिसे हम पकोड़ों के पहले या साथ खा लें तो गैस न बन सके? दिल के रोग से मरने की तो डॉक्टर कहते ही रहते हैं, परंतु गैस के कारण बेसन के पकोड़े ठीक से न खा पाने का मलाल भी तो जानलेवा है।

बेसन माफिक नहीं बैठता, पर पकोड़ों पर जीवन टिका है और उन्हें छोड़ने की बजाय वे मर जाना पसंद करेंगे। कुछ हैं, जिन्हें बैंगन से गैस बनती है और ऐसी बनती है साहब कि प्राकृतिक गैस के महत्वपूर्ण भंडारों में नाम शामिल हो जाये, तो आश्चर्य न कीजियेगा। तो बैंगन न खाया करें आप। बहुत सरल उपाय। कहना आसान है। हम भी खाते तो नहीं, पर कभी–कभी खाने में आ जाते हैं,

अनजाने में। जैसे चलते कभी–कभार गोबर में पैर नहीं पड़ जाता है आपका, वैसे ही। अब? तो कभी बैंगन हमसे खब ही जाये, तो फिर क्या करें? आप तो यह बतायें। बैंगन के बाद ऐसी गैस बना करती है डाक्साब कि वो तो अपना वज़न इत्ता है और पेट इत्ता बड़ा तथा भारी है, नहीं तो गैस के गुब्बारे टाइप उड़ा करते कमरे में। हँसिये मत! सच्ची बताते हैं। कमरे में कोई खोजता, तो हम ऊपर से आवाज़ देते कि तनिक ऊपर की तरफ देखो–हम छत से लगे हैं। पत्नी हँसती कि हम न कहते थे कि बैंगन मत खाओ, अब टँगे रहो कुछ देर।

इनको तो फिर भी पता है, परंतु ऐसे भी हैं कि जिन्हें पता ही नहीं चलता कि गैस के पीछे का असली किस्सा क्या है?

वे ज़माने की हर शह पर शक करते हैं। कभी खड़ी मिर्च पर संदेह करते हैं, तो कभी अमचूर के पीछे दबे पाँव जाते हैं। कुछ दिनों तक वे दावे के साथ कहते हैं कि असली मुजरिम पकड़ाई में आ गया है और गैसकांड के पीछे कटहल की सब्जी का हाथ था। कुछ ही दिनों बाद वे कटहल को बाइज्ज़त बरी करते हुये बताते हैं कि हमें कुछ गलत परिस्थितिजन्य सबूतों ने दिशाभ्रम में डाल दिया था, जिसके कारण हमने तीन माह तक कटहल नहीं खाया, जबकि सारी बदमाशी भरवाँ भिण्डी के ऊपर मूर्ख पत्नी द्वारा बूंदी का रायता देने की थी। कुछ दिनों बाद वे पत्नी को बाइज्जत बरी करके और उसे मूर्ख बताने की मूर्खता पर शर्मिन्दगी प्रकट करते हुये बताते हैं कि असली किस्सा कुछ यूँ हुआ कि कल, हम, यूँ ही पेट के बल पलंग पर पड़े थे कि उसी पोजीशन में नींद आ गई–और पेट घंटों दबा रह गया–इसी से गैस बन गई। फिर एक दिन बच्चों के विरुद्ध एफ.आई.आर. दर्ज करायेंगे कि ये आजकल के बच्चे बड़े हरामी हो गये हैं यार, कल स्सालों ने हमें फुसलाकर आधी चाकलेट खिला दी कि पापा, आप भी देखो कि चाकलेटी इतनी मीठी कैसे बनी है? बस, तभी से पेट में हाहाकार मचा है। वे दोस्तों के विरुद्ध आरोप–पत्र तैयार करते हैं कि नायर ने बेवकूफ बना दिया, कहा कि एक बीयर में कुछ नहीं होता। स्साले ने बातों में बहलाकर पिलवा दी और अब हम ऐसे मरे जा रहे हैं कि वो तो अच्छा है कि गैस के कारण हम चल पाने की स्थिति में नहीं हैं, वरना तो नायर को घर जाकर उसे ठोककर आते।

तो क्या इस गैस का कोई इलाज नहीं है डॉक्टर साब?

है क्यों नहीं? शर्तिया इलाज हैं। ऐसे–ऐसे इलाज हैं कि क्या कहें! देसी भी हैं और विदेशी भी। होम्यापैथी में तो खैर हैं ही, या कहें कि होंगे ही क्योंकि जब उसमें हर चीज़ का है, तो इसका भी होगा ही–और शर्तिया होगा क्योंकि वहाँ हर चीज का शर्तिया ही है। और आयुर्वेद में? उसमें तो होना ही चाहिये क्योंकि आयुर्वेद तो गैस से भी पुरानी चीज है और हमारी तरफ यह मान्यता है कि जो चीज जितनी जूनी–पुरानी हो जाये, उसकी उतनी ही इज्जत होनी चाहिये।

इधर एक नेचुरोपैथी वाले बता रहे थे कि उनके पास इसका ऐसा इलाज है जो इसे जड़ से मिटा देता है। बस, आप गीली–मिट्टी का मोटा–सा लेप पेट पर लगाकर तीन घंटे सुबह तथा चार घंटे शाम को एकदम चित्त लेटे रहें और बीच के समय में नींबू–पानी का एक घड़ा पी जायें। हमने पूछा कि फिर काम पर आदमी कब जाये तथा घर का सौदा–सुलफ कब करने का टाइम निकाले? वे नाराज़ हो गये। बोले, कि भैया, नेचुरोपैथी में समय तो आपको देना ही पड़ेगा, भले ही कल को कोई कान पकड़कर काम से निकाल दे।

और ऐलोपैथी में? उनकी न पूछो। कान्फ्रेन्सों और सेमिनारों में मुफ्त की खा–पीकर वे आजकल खुद ही गैस से इतना परेशान हैं कि उनसे न पूछना ही अच्छा है। ●●●

–ज्ञान चतुर्वेदी
ए–40, अलकापुरी, भोपाल.
फोन : 9303131964